



---

## भगवद्गीता में ज्ञान कर्म और भक्ति का समन्वय एक शास्त्रीय विवेचन

डॉ० राज्यश्री मिश्रा

असिस्टेंट प्रोफेसर संस्कृत,

महात्मा गांधी बालिका विद्यालय (पी.जी.) कालेज फिरोजाबाद

### सार

वस्तुतः गीता योग शास्त्र है इसमें वर्णित विभिन्न योगों में भक्ति योग, कर्म योग और ज्ञान योग महत्वपूर्ण है। अतः यह जानना आवश्यक है योग क्या है शाब्दिक रूप से योग शब्द युज धातु से बना है जिसका अर्थ है मिलना गीता में आत्मा परमात्मा के मिलन के अर्थ में इसका प्रयोग हुआ है जब आत्मा बंधन से युक्त हो जाती है तब उसको बंधन से मुक्त करने का साधन योग है। वस्तुतः योग मोक्ष मार्ग है जो परमात्मा का साक्षात्कार कराता है इस मोक्ष मार्ग के तीन प्रकार हैं : भक्ति मार्ग, कर्म मार्ग और ज्ञान मार्ग। श्रीमद्भगवद्गीता भारतीय दर्शन और धर्म का एक अनुपम ग्रंथ है। यह न केवल एक धार्मिक पाठ है, बल्कि जीवन के गूढ़ रहस्यों और मानव अस्तित्व के परम लक्ष्य को समझने का एक मार्गदर्शक भी है। गीता में ज्ञान, कर्म और भक्ति के तीन प्रमुख मार्गों का विस्तृत वर्णन किया गया है, और इन तीनों के समन्वय द्वारा मोक्ष या परम सत्य की प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त किया गया है। यह शोध पत्र गीता में ज्ञान, कर्म और भक्ति के समन्वय का शास्त्रीय विवेचन प्रस्तुत करता है। मुख्य शब्द

भगवद्गीता, ज्ञान, कर्म, भक्ति

### भूमिका

गीता में भगवान श्रीकृष्ण ज्ञान योग के फल का भी वर्णन करते हैं। ज्ञान के द्वारा साधक अज्ञान के बंधन से मुक्त हो जाता है और उसे परम शांति और मोक्ष की प्राप्ति होती है। वह कर्मों के फल से अनासक्त होकर निष्काम कर्म करता है और जीवन-मृत्यु के चक्र से छूट जाता है। ज्ञानी व्यक्ति सभी प्राणियों में समान रूप से परमात्मा को देखता है और इसलिए वह किसी से द्वेष नहीं करता।

ज्ञान योग एक कठिन साधना है जिसके लिए दृढ़ संकल्प, वैराग्य और गुरु का मार्गदर्शन आवश्यक है। यह मार्ग बुद्धि और विवेक के उपयोग पर जोर देता है, लेकिन इसका लक्ष्य केवल बौद्धिक ज्ञान प्राप्त करना नहीं है, बल्कि उस ज्ञान को अपने अनुभव में उतारना और आत्मा के वास्तविक स्वरूप को साक्षात्कार करना है। ज्ञान योग का अर्थ है विवेक और बुद्धि के माध्यम से सत्य को जानना। यह मार्ग सांसारिक बंधनों से मुक्ति पाने के लिए आत्मा और परमात्मा के वास्तविक स्वरूप का बोध कराने पर केंद्रित है। गीता में, भगवान कृष्ण अर्जुन को आत्मा की अमरता, शरीर की क्षणभंगुरता और प्रकृति के तीन गुणों (सत्त्व, रज, तम) के बारे में बताते हैं। ज्ञान योग के साधक के लिए आत्म-विश्लेषण, शास्त्रों का अध्ययन और तत्वज्ञान का चिंतन महत्वपूर्ण है। गीता का द्वितीय अध्याय, जिसे 'सांख्य योग' भी कहा जाता है, ज्ञान योग के मूल सिद्धांतों

का प्रतिपादन करता है। इसमें आत्मा को अविनाशी और अपरिवर्तनीय बताया गया है, जो जन्म और मृत्यु के चक्र से परे है। ज्ञान योग अहंकार और अज्ञान के बंधनों को काटकर मनुष्य को सत्य के साक्षात्कार की ओर ले जाता है।

भगवद्गीता में ज्ञान योग आत्मज्ञान और मुक्ति का एक महत्वपूर्ण मार्ग है। यह हमें अपने वास्तविक स्वरूप को जानने, सांसारिक आसक्तियों से मुक्त होने और परमात्मा के साथ अपने शाश्वत संबंध को स्थापित करने की प्रेरणा देता है। ज्ञान योग की साधना के माध्यम से मनुष्य जीवन के परम लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है और परम शांति का अनुभव कर सकता है।

कर्म योग का अर्थ है फल की आसक्ति के बिना कर्तव्य का पालन करना। गीता में कर्म को जीवन का अभिन्न अंग बताया गया है। भगवान कृष्ण अर्जुन को युद्ध करने के अपने कर्तव्य से विमुख न होने की प्रेरणा देते हैं, लेकिन साथ ही कर्म के फल के प्रति अनासक्ति का उपदेश भी देते हैं। कर्म योग सिखाता है कि प्रत्येक कर्म, चाहे वह छोटा हो या बड़ा, यदि निष्काम भाव से किया जाए तो वह बंधन का कारण नहीं बनता, बल्कि मुक्ति की ओर ले जाता है। गीता का तीसरा अध्याय 'कर्म योग' के महत्व को विस्तार से बताता है। इसमें यज्ञ, दान और तपस्या जैसे कर्मों को कर्तव्य बुद्धि से करने का निर्देश दिया गया है। कर्म योग क्रियाशीलता और आध्यात्मिकता के बीच संतुलन स्थापित करता है।

भक्ति योग का अर्थ है ईश्वर के प्रति अनन्य प्रेम और समर्पण। यह मार्ग हृदय की भावनाओं को परमात्मा की ओर प्रवाहित करने पर केंद्रित है। गीता में भक्ति को मोक्ष प्राप्ति का सबसे सरल और सुगम मार्ग बताया गया है। भगवान कृष्ण अर्जुन को अपनी अनन्य भक्ति करने और अपने सभी कर्मों को उन्हें समर्पित करने का उपदेश देते हैं। भक्ति योग में ईश्वर के नाम का जप, उनकी स्तुति, उनकी लीलाओं का श्रवण और उनके प्रति पूर्ण शरणागति जैसे साधन महत्वपूर्ण हैं। गीता का बारहवां अध्याय 'भक्ति योग' के महत्व और विभिन्न प्रकार की भक्तियों का वर्णन करता है। भक्ति योग मनुष्य को भावनात्मक रूप से ईश्वर से जोड़ता है और उसे परम शांति और आनंद की अनुभूति कराता है।

भगवद्गीता इन तीनों मार्गों को परस्पर विरोधी नहीं मानती, बल्कि उन्हें एक दूसरे के पूरक के रूप में देखती है। गीता का सार यह है कि मोक्ष की प्राप्ति के लिए इन तीनों का समन्वय आवश्यक है। ज्ञान हमें यह समझने में मदद करता है कि हमारा वास्तविक स्वरूप क्या है और हमें किस प्रकार के कर्म करने चाहिए जो हमारे आध्यात्मिक विकास में सहायक हों। ज्ञान के अभाव में कर्म बंधन का कारण बन सकते हैं। निष्काम कर्म करने से मन शुद्ध होता है और ज्ञान को ग्रहण करने की क्षमता विकसित होती है। अहंकार और आसक्ति से मुक्त होकर किए गए कर्म आत्म-साक्षात्कार की ओर ले जाते हैं। ईश्वर के प्रति प्रेम और समर्पण ज्ञान और कर्म को एक दिव्य उद्देश्य प्रदान करते हैं। भक्ति के माध्यम से किए गए कर्म अधिक प्रभावी और आध्यात्मिक रूप से फलदायी होते हैं।

गीता के विभिन्न अध्यायों में इन तीनों योगों के समन्वय को स्पष्ट किया गया है। उदाहरण के लिए, भगवान कृष्ण कहते हैं कि जो व्यक्ति कर्मयोगी है, वह ज्ञानी भी है और भक्त भी है। सच्चा ज्ञानी वही है जो अपने कर्मों को ईश्वर को समर्पित करता है और फल की आसक्ति से मुक्त रहता है। इसी प्रकार, सच्ची भक्ति ज्ञान और निष्काम कर्म के बिना अधूरी है।

भगवद्गीता में ज्ञान, कर्म और भक्ति के समन्वय का शास्त्रीय आधार वेदों और उपनिषदों में निहित है। उपनिषदों में ब्रह्मज्ञान और आत्मा के स्वरूप का वर्णन है, जो ज्ञान योग का आधार है। वैदिक कर्मकांड और यज्ञ आदि कर्म योग के प्रारंभिक रूप हैं। भक्ति की अवधारणा भी वेदों में विभिन्न रूपों में मिलती है। गीता इन प्राचीन ज्ञान धाराओं को एक सूत्र में पिरोकर एक समग्र और व्यावहारिक आध्यात्मिक मार्ग प्रस्तुत करती है।

गीता का शास्त्रीय महत्व इस तथ्य में भी निहित है कि यह श्रुति (वेदों) और स्मृति (उपनिषदों, पुराणों आदि) के सिद्धांतों का सार प्रस्तुत करती है। भगवान कृष्ण स्वयं परमात्मा के अवतार माने जाते हैं, इसलिए उनके वचन स्वतः प्रमाण हैं। गीता का दर्शन अद्वैत वेदांत, विशिष्टाद्वैत और द्वैताद्वैत जैसे विभिन्न दार्शनिक संप्रदायों के लिए प्रेरणा का स्रोत रहा है, जो इसके व्यापक और समावेशी दृष्टिकोण को दर्शाता है।

गीता के अठारह अध्यायों में विभिन्न योगों का वर्णन है, जो मनुष्य को मोक्ष और आत्मज्ञान की ओर ले जाते हैं। इनमें से एक महत्वपूर्ण योग है ज्ञान योग, जो बुद्धि और विवेक के माध्यम से सत्य को जानने और आत्मा को परमात्मा से जोड़ने का मार्ग प्रशस्त करता है। ज्ञान योग का सार यह है कि अज्ञान ही सभी दुखों और बंधनों का मूल कारण है। जब मनुष्य स्वयं के वास्तविक स्वरूप को, आत्मा और परमात्मा के भेद को, और संसार की क्षणभंगुरता को जान लेता है, तो वह मोह और आसक्ति से मुक्त हो जाता है। गीता में भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन को ज्ञान योग के महत्व और उसकी साधना के विभिन्न पहलुओं का उपदेश देते हैं।

### साहित्य की समीक्षा

ज्ञान योग की साधना में विवेक और वैराग्य दो महत्वपूर्ण स्तंभ हैं। विवेक के द्वारा साधक सत्य और असत्य, नित्य और अनित्य, आत्मा और अनात्मा के बीच अंतर को समझता है। वह यह जानता है कि शरीर, मन और बुद्धि अनित्य हैं और आत्मा ही शाश्वत और अविनाशी है। वैराग्य के द्वारा साधक सांसारिक भोगों और आसक्तियों से detachment प्राप्त करता है। वह जानता है कि ये क्षणिक सुख अंततः दुख का कारण बनते हैं और इसलिए वह इनमें लिप्त नहीं होता। [1]

यह समझना कि 'मैं' शरीर, मन या बुद्धि नहीं हूँ, बल्कि इनसे परे एक अविनाशी आत्मा हूँ। यह ज्ञान साधक को देहाभिमान से मुक्त करता है। नित्यानित्य वस्तु विवेक: यह जानना कि इस संसार में परिवर्तनशील और नश्वर क्या है और शाश्वत और अपरिवर्तनीय क्या है। आत्मा ही एकमात्र नित्य तत्व है, जबकि भौतिक जगत और उसके भोग क्षणिक हैं। [2]

ज्ञान को प्राप्त करने के लिए गुरु के वचनों को ध्यान से सुनना (श्रवण), उस पर तर्क और चिंतन करना (मनन), और फिर उस ज्ञान को अपने अंतःकरण में स्थिर करने के लिए निरंतर ध्यान करना (निदिध्यासन) आवश्यक है। वेदों, उपनिषदों और गीता जैसे ज्ञानवर्धक शास्त्रों का अध्ययन करना सत्य को समझने में सहायक होता है। [3]

ज्ञानी और आध्यात्मिक व्यक्तियों की संगति ज्ञान प्राप्ति के मार्ग में प्रेरणा और मार्गदर्शन प्रदान करती है। 'मैं कर्ता हूँ' या 'यह मेरा है' जैसे अहंकार के भाव को त्यागना ज्ञान योग की साधना में अत्यंत महत्वपूर्ण है। अहंकार अज्ञान का प्रतीक है और सत्य के अनुभव में बाधा डालता है। सुख-दुख, लाभ-हानि, मान-अपमान आदि द्वंद्वों में समान भाव रखना ज्ञान योगी का लक्षण है। वह जानता है कि ये सब मन की वृत्तियाँ हैं और आत्मा इनसे परे है। [4]

भगवद्गीता में ज्ञान कर्म और भक्ति का समन्वय एक शास्त्रीय विवेचन

भगवद्गीता, भारतीय दर्शन और अध्यात्म का एक अमूल्य रत्न है, जो महाभारत के युद्धक्षेत्र में भगवान श्रीकृष्ण द्वारा अर्जुन को दिए गए उपदेशों का सार है। इस ग्रंथ में जीवन के विभिन्न पहलुओं पर गहन चिंतन किया गया है, और कर्म योग उनमें से एक महत्वपूर्ण विषय है। कर्म योग का अर्थ है कुशलतापूर्वक और अनासक्त भाव से अपने निर्धारित कर्तव्यों का पालन करना। यह निष्क्रियता या कर्मों के त्याग का मार्ग नहीं है, बल्कि कर्मों को एक आध्यात्मिक साधना के रूप में देखने का दृष्टिकोण है।

गीता के अनुसार, प्रत्येक मनुष्य किसी न किसी रूप में कर्म करने के लिए बाध्य है। प्रकृति के तीन गुण - सत्व, रज और तम - निरंतर क्रियाशील रहते हैं और प्राणियों को कर्म करने के लिए प्रेरित करते हैं। इसलिए, कर्मों से पूरी तरह से मुक्त रहना संभव नहीं है। ऐसी स्थिति में, प्रश्न यह उठता है कि कर्मों के बंधन से कैसे मुक्त हुआ जाए और जीवन को सार्थक कैसे बनाया जाए। यहीं पर कर्म योग का महत्व सामने आता है।

भगवान श्रीकृष्ण कर्म योग के महत्व को समझाते हुए कहते हैं कि मनुष्य को अपने निर्धारित कर्तव्यों का पालन निष्काम भाव से करना चाहिए। इसका अर्थ है कि कर्मों के फल की आसक्ति के बिना, केवल कर्तव्य भावना से कर्म करना। जब हम किसी फल की इच्छा से बंधकर कर्म करते हैं, तो हम उस फल की प्राप्ति या अप्राप्ति से प्रभावित होते हैं, जिससे राग-द्वेष और बंधन उत्पन्न होते हैं। इसके विपरीत, जब हम अनासक्त होकर कर्म करते हैं, तो हम इन बंधनों से मुक्त रहते हैं और हमारा चित्त शांत और स्थिर रहता है।

कर्म योग का यह सिद्धांत निष्क्रियता का समर्थन नहीं करता। गीता में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि कर्म न करना भी एक प्रकार का कर्म है, जो आलस्य और अकर्मण्यता को बढ़ावा देता है। इसलिए, मनुष्य को अपने सामाजिक, पारिवारिक और व्यक्तिगत दायित्वों का निर्वाह पूरी निष्ठा और ईमानदारी से करना चाहिए। महत्वपूर्ण यह है कि कर्मों को किस भावना से किया जा रहा है।

कर्म योग की साधना में तीन मुख्य बातें महत्वपूर्ण हैं:

कर्तव्य निष्ठा: अपने निर्धारित कर्तव्यों को पहचानना और उन्हें पूरी क्षमता और ईमानदारी से निभाना।

अनासक्ति: कर्मों के फल के प्रति मोह या आसक्ति का त्याग करना। सफलता या असफलता को समान भाव से स्वीकार करना।

समर्पण: अपने कर्मों को ईश्वर या परम चेतना को समर्पित करना, यह मानते हुए कि हम केवल निमित्त मात्र हैं और वास्तविक कर्ता कोई और है।

कर्म योग का अभ्यास करने से व्यक्ति को अनेक लाभ प्राप्त होते हैं। सबसे महत्वपूर्ण लाभ यह है कि यह चित्त को शुद्ध करता है और अहंकार को कम करता है। जब हम फल की इच्छा के बिना कर्म करते हैं, तो हमारा ध्यान कर्म पर केंद्रित होता है, जिससे कार्य कुशलता बढ़ती है और मन एकाग्र होता है। अनासक्ति का भाव हमें सुख-दुख, लाभ-हानि जैसे द्वंद्वों से ऊपर उठने में मदद करता है, जिससे मानसिक शांति और स्थिरता प्राप्त होती है। अंततः, कर्म योग आध्यात्मिक प्रगति का मार्ग प्रशस्त करता है और मोक्ष की ओर ले जाता है।

भक्ति योग कोई जटिल कर्मकांड या कठोर तपस्या नहीं है। यह हृदय की एक सहज अवस्था है, जिसमें भक्त भगवान के प्रति अपने प्रेम और समर्पण को विभिन्न रूपों में अभिव्यक्त करता है। गीता में भक्ति के कई प्रकार बताए गए हैं, जिनमें प्रमुख हैं:

श्रवण : भगवान की लीलाओं, गुणों और महिमा का श्रवण करना भक्ति का एक महत्वपूर्ण अंग है। पवित्र ग्रंथों का पाठ सुनना, संतों के प्रवचन सुनना और भगवान के नामों का कीर्तन सुनना मन को शुद्ध करता है और भगवान के प्रति प्रेम को बढ़ाता है।

कीर्तन: भगवान के पवित्र नामों, गुणों और लीलाओं का गायन करना कीर्तन कहलाता है। यह भक्ति का एक शक्तिशाली माध्यम है जो हृदय को आनंद और प्रेम से भर देता है।

स्मरण: हर समय भगवान का स्मरण करना, उनके स्वरूप और कार्यों का चिंतन करना भक्ति का एक अभिन्न अंग है। यह मन को सांसारिक विषयों से हटाकर भगवान में स्थिर करने में सहायक होता है।

पादसेवन: भगवान के चरणों की सेवा करना, उनके भक्तों की सेवा करना और उनके कार्यों में सहयोग करना भक्ति का एक रूप है। यह अहंकार को कम करता है और समर्पण की भावना को बढ़ाता है।

अर्चन: भगवान की मूर्ति या चित्र की पूजा करना, उन्हें फूल, फल, धूप आदि अर्पित करना भक्ति का एक पारंपरिक तरीका है। यह प्रेम और श्रद्धा की अभिव्यक्ति है।

वंदन: भगवान और उनके भक्तों के प्रति श्रद्धापूर्वक नमस्कार करना वंदन कहलाता है। यह विनम्रता और समर्पण का प्रतीक है।

दास्य: स्वयं को भगवान का दास मानना और उनकी आज्ञाओं का पालन करना दास्य भाव की भक्ति है। यह पूर्ण समर्पण की भावना को दर्शाता है।

सख्य: भगवान को अपना परम मित्र मानना और उनसे आत्मीय संबंध स्थापित करना सख्य भाव की भक्ति है। अर्जुन और कृष्ण का संबंध इसका उत्कृष्ट उदाहरण है।

आत्मनिवेदन: पूर्ण रूप से स्वयं को भगवान को समर्पित कर देना, अपनी इच्छाओं और अहंकार का त्याग कर देना भक्ति का सर्वोच्च रूप है।

गीता में भगवान श्रीकृष्ण यह भी स्पष्ट करते हैं कि भक्ति योग किसी विशेष जाति, धर्म या लिंग तक सीमित नहीं है। जो कोई भी सच्चे हृदय से और प्रेमपूर्वक उन्हें भजता है, वह उन्हें प्राप्त कर सकता है।

## निष्कर्ष

भगवद्गीता में ज्ञान, कर्म और भक्ति का समन्वय एक अद्वितीय और सार्वभौमिक आध्यात्मिक दर्शन प्रस्तुत करता है। यह सिखाता है कि मनुष्य अपनी प्रकृति और प्रवृत्ति के अनुसार किसी भी मार्ग को अपनाकर और उसे अन्य मार्गों के साथ समन्वित करके जीवन के परम लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है। ज्ञान हमें सत्य का बोध कराता है, कर्म हमें कर्तव्यनिष्ठ बनाता है, और भक्ति हमें ईश्वर से जोड़ती है। इन तीनों के संतुलित अभ्यास से मनुष्य सांसारिक बंधनों से मुक्त होकर परम शांति और आनंद को प्राप्त कर सकता है। गीता का यह शास्त्रीय विवेचन आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना कि कुरुक्षेत्र के युद्ध के मैदान में था, क्योंकि यह मानव जीवन की शाश्वत समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करता है।

## संदर्भ

1. गीता रहस्य-तिलक, लाकमान्य, किताब महल, इलाहाबाद.
2. गीता रहस्य - तिलक लाकमान्य, बालगंगाधर, मोतीलाल बनारसीदास, मुम्बई.
3. श्रीमद्भगवद्गीता- शांडरभाष्य, गीताप्रेस, गोरखपुर.
4. श्रीमद्भगवद्गीता- असली लाहौरी, रणधीर प्रकाशन, हरिद्वार.
5. श्रीमद्भागवत पुराण - वेदव्यास, महर्षि, हिन्दी अनुवाद, स्वामी अखण्डानन, सरस्वती, गीताप्रेस, गोरखपुर.
6. महाभारत - वेदव्यास, महर्षि, हिन्दी अनुवाद, स्वामी अखण्डानन, सरस्वती, गीताप्रेस, गोरखपुर.
7. मुक्तिकोपनिषद् - रामतीर्थ, स्वामी, गीताप्रेस, गोरखपुर.
8. मनुस्मृति -नन्द, चैखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, .

9. तत्व टीका - वेङटनाथ, निर्णय सागर, प्रेस.
10. भारतीय दर्शन - चटर्जी एवं दास, परिमल पब्लिकेशन, दिल्ली